International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, January-June 2019, Submitted in June 2019, iajesm2014@gmail.com

कबीर समाज सुधारक के रूप में

Premlata, Research Scholar (Hindi), Janaradan Rai Nagar Vidyapeeth, Udaipur (Rajasthan).
Dr. Rennu, Professor (Hindi), Janaradan Rai Nagar Vidyapeeth, Udaipur (Rajasthan).

शोध सार

समाजसुधारक के रूप विख्यात संत काव्यधारा के प्रमुख कवि कबीर का नाम हिन्दी साहित्य में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। कबीर समाज सुधारक पहले तथा कवि बाद में है। उन्होने समाज में व्याप्त रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों पर करारा व्यंग्य किया है। उन्होने धर्म का सम्बन्ध सत्य से जोड़कर समाज में व्याप्त रूढ़िवादी परम्परा का खण्डन किया है। कबीर ने मानव जाति को सर्वश्रेष्ठ बताया है तथा कहा है कि इस में से कोई भी ऊंचा या नीचा नहीं है। एक महान क्रान्तिकारी होने के कारण उन्होने समाज में व्याप्त अनेक कुरूतीयों व बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया है। क बीर ने मानव जाति को एक अच्छा सन्देश दिया है। हमें उनके सन्देश को अपने जी वन में उतारना चाहिए।

मुख्य शब्दः निरक्षर, ईश्वर दार्शनिक, सद्‌कर्म, दौलत, विनम्रता, छिन्दयान्वेषी, उपवास आदि

हिन्दी साहित्य का इतिहास बहुत पुराना है, हिन्दी साहित्य का द्वितीय चरण भक्तिकाल के नाम से जाना जाता है। भक्ति काल को सवर्णयुग के नाम से जान जाता है। इस युग में दो धाराएं चली निर्गुणधारा और सगुणधारा। निर्गुणधारा में संत काव्य धारा व सुफी काव्य धारा शामिल थी। सगुणधारा में रामकाव्यधारा व कृष्णकाव्यधारा शामिल थी । प्रस्तुत शोध का विषय संत काव्यधारा के प्रमुख समाज सुधारक कवि कबीर दास हैं। कबीरदास का जन्म 1398 ई. में हुआ। ये जाति से जुलाहा थे और काशी में रह ते थे। इनकी पत्नी का नाम लोई था। कबीर के पुत्र का नाम कमाल व पुत्री का ना म कमाली था। ये सिकन्दर लोधी के समकाली थे। इनके गुरू का नाम रामानन्द था। संत कवि कबीरदास निरक्षर थे। इनके निम्न दोहे से स्पष्ट है कि वे निरक्षर थे।

मसि कागद छूयौ नहीं कलम गहयौ नहीं हाथ।

निरक्षर होने पर भी वे एक महान् दार्शनिक थे। महान् दार्शनिक होने के कारण ही आज संत कबीर को याद किया जाता है। 1518 ई. में इनकी मृत्यु हो गई थी। कबी र कवि होने से पहले एक समाजसुधारक थे उन्होने समाज मे व्याप्त अन्धविश्वास, पाख ण्ड, मूर्ति पूजा, छुआछुत, तथा हिंसा का विरोध किया है। वे सभी इंसान को एक ही ईश्वर की सन्तान मानते हैं। हिन्दू -मुस्लिम की बढ़ती खाई को पाटने का काम संत कवि कबीरदास ने ही किया था। उन्होने धर्म के नाम पर होने वाले दंगों का पूरजोर खण्डन किया है। उन्होने भगवान का निवास स्थान अपने मन में ही बताया है।

"कस्तूरी कुण्डली बसै, मृग ढूढें बन मांहि।
एसै घटि घटि राम है, दुनियां देखे मांहि।।" 1

कबीर कहते हैं कि हिरण कस्तूरी की खुशबू को जंगल में ढूंढता फिरता है। जबकि कस्तूरी की वह सुगन्ध उसकी अपनी नाभि में व्याप्त है। परन्तु वह जान नहीं पाता। उसी प्रकार भगवान कण कण में व्याप्त है परन्तु मनुष्य उसे तीर्थों मे ढूढ़ता फिरता है।

हिंसा का विरोध :-

संत कवि कबीरदास हिंसा का विरोध करते हैं उन्हें उन लोगो से नफरत है जो जीवों को खाते हैं।

"बकरी पाती खात है, ताकि काढ़ी खाल।
जो नर बकरी खात है, तिनको कौन हवाल।। 2

कबीर कहते हैं कि बकरी हरी पतिंयो को खाती है फिर भी उसकी खाल उधेड़ी जा ती है तब भला सोचिए जो व्यक्ति बकरी को खाता है उसका क्या होगा?

जाति पाति का विरोधः -

कबीर ने जाति पाति का विरोध किया है वे समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था तथा जाति पाति के भेद भाव में सुधार करना चाहते थे।

"जात पात पूछे ना कोई,
हरि को भजै सो हरि का होई।" 3

कबीरदास जाति विभाजन का विरोध करते हैं वे कहते हैं कि जाति पाति को कोई न हीं पूछता। हम एक ही ईश्वर की सन्तान है। हरि का यहां मतलब जीवन में सदकर्म, सदज्ञान, सदशिक्षा से नाता जोड़ना है।

साम्प्रदायिकता का विरोधः-

साम्प्रदायिकता का अर्थ होता है किसी दूसरे के धर्म को नीचा दिखाकर खुद के धर्म को ऊंचा उठाना । कबीर ने धर्म के नाम पर लड़ने के वालें मुस्लमानों का विरोध किया है।

"सन्तों देखहु जग बैराना।
हिन्दू कहे मौहि राम पियारा, तुरक कहै रहिमाणा ।
आपस में दोऊ लरि-लरि गुए, मरम न काहू जाना।।" 4

कबीर कहते हैं कि सज्जनों देखो यह संसार पागल हो गया है। हिन्दू राम के भक्त हैं और तुर्क को रहमान प्यारा है। इस बात पर दोनो लड़ लड़ कर मौत के मुंह में जा पहुंचे हैं। परन्तु दोनो में से सच्चाई को कोई नहीं जान पाया कि हम सब एक ही ईश्वर की सन्तान है।

मूर्ति पूजा का खण्डनः-

कबीर ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया है

"कबीर पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूं पहार।
घर की चाकी क्यों नाहिं पूजैं पीसि खाय संसार।।" 5

कबीर कहते हैं कि यदि पत्थर की पूजा करने से भगवान मिलते हैं मैं पहाड़ की पू जा कर लेता। उसकी जगह कोई घर की चक्की को नहीं पूजता जिसमें अनाज को पीसकर सभी लोग अपना पेट भरते हैं।

पाखण्डवाद का विरोधः-

कबीर ने समाज में व्याप्त पाखण्डवाद का विरोध किया है

"दिन भर रोजा रहत है, रात हनत दे गाय।
यह तो खून व बन्दगी, कैसे खुशी खुदाय।।" 6

कबीर उन लोगों पर व्यंग्य करते हैं जो दिन भर तो व्रत करते हैं परन्तु रात को गा य को मारकर खा जाते हैं। कबीर कहते हैं कि मैं नहीं समझ पाया कि ये कैसी खु शी है।

"माला तिलक लगाई के, भक्ति न आई हाथ
दाढ़ी मूछं मुराय कै, चलै दुनी के साथ
दाढ़ी मूछं मुराय कै हुहा, घोटम घोट
मन को क्यों नहीं मूरिये, जामै भरीया खोट। 7

कबीर दास उन लोगों पर व्यंग्य करते हैं जो माला जपते हैं तथा तिलक लगाते हैं। माला, तिलक तथा दाढ़ी मुढ़ाने से भक्त नहीं बन जाते। मनुष्य को मन का मैल सा फ करना चाहिए।

"कांकर पाथर जोरि के, मस्जिद लई बनाए
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय।" 8

इस दोहे में कबीर ने आवाज देकर चिल्लाने वाले मुस्लिम समुदाय के लोगो को पाख ण्डी कहा है। उन्होने धर्म का सम्बन्ध सत्य से जोड़कर असत्य का निषेध किया है।

लोक मंगल की भावना :-

कबीर समाज में सुधार लाने के लिए लोकमंगल की कामना करते हैं।

कबीरा खड़ा बाजार में, मांगे सब की खैर।
ना काहू सों दोस्ती, न काहू सौ बैर।।"

कबीर लोकमंगल की कामना करते हुए कहते हैं कि इस संसार में आकर कबीर अप ने जीवन में बस यही चाहते हैं कि भला हो संसार में यदि किसी से दोस्ती नही तो

दुश्मनी भी न हो। कबीर मनुष्यो को एक ही शक्ति से उत्पन्न हुआ मानते हैं। उन्होंने मनुष्य को संकीर्ण विचारधारा को त्यागकर उच्च तथा आदर्श जीवन जीने का उपदेश दिया है। उनके दोहे आज के समय में भी उतनी ही सार्थकता दिखाते हैं जितने कबीर के समय में थे।

प्रेमतत्व की प्रधानता :-

कबीरदास ने सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए प्रेम की प्रधानता पर जोर दिया है।

"पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पण्डित भया न कोय ।
ढ़ाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पण्डित होय।" 10

क्बीर कहते हैं कि बड़ी बड़ी किताबें पढ़ने से कोई विद्वान नहीं बनता। कितने ही लोग हैं जो किताबें पढ़ पढ़ कर संसार से मृत्यु के मुहं तक चले गए। कबीर कहते हैं कि यदि कोई प्यार के ढ़ाई अक्षर ही अच्छी तरह से पढ़ ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

ज्ञान और कर्म की महानताः -

कबीरदास जात पात, ऊंच नीच का कोई भेदभाव नहीं करते थे। वे इन्सान के ज्ञान को ही महान बताते हैं। वे कहते हैं कि मनुष्य का कार्य उसे महान बनाता है।

"जाति न पूछो साधा की पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का पड़ा रहने दो मयान।" 11

कबीरदास कहते हैं कि साधु की जाति न पूछ कर उसके ज्ञान को समझना चाहिए। तलवार का मूल्य होता है न कि उसकी म्यान को ढ़कने वाले खोल का। कबीरदास ने ऊंच और नींच का सम्बन्ध का किसी व्यवसाय से नहीं जोड़ा। वे किसी भी व्यवसाय को नीचा नहीं समझते थे वे अपने आप को जुलाहा बताते हैं।

परिश्रम की महताः -

कबीरदास महान् उपदेशक थे।वे परिश्रम करने वालों को बहुत महान समझते थे। परिश्रम द्वारा कबीर समाज में व्याप्त गरीबी को दूर करना चाहते थे।

"कबीर उद्यम अवगुण को नहीं, जो करि जाने कोय।
उद्यम में आनन्द है, सांई सेती होय।।" 12

कबीर कहते हैं कि परिश्रम में सफलता का आनन्द छिपा है। जो मनुष्य परिश्रम करता है उसका ईश्वर भी साथ देता है।

निम्न वर्ग के लोगों के पक्षधारः -

कबीरदास निम्न जाति के लोगों के पक्षधर थे, वे घमण्डी लोगों का विरोध कर कल्याणकारी भावना के समर्थक थे।

"दुर्बल को न सताईये, जाकि मोटी हाय।
मुई खाल की सांस लो, लोह भसम हो जाए।" 13

कबीर कहते हैं कि दुर्बल अर्थात गरीब को दुख मत देना क्योंकि यदि उनकी बद्दुआ लगी तो वो सबको नष्ट कर देंगे।

पूरे विश्व को एक परिवार समझना :-

कबीरदास पूरे संसार को एक ही परिवार समझते थे और पूरे संसार का सुधार करना चाहते थे। वे पूरे संसार को विनम्रता का सन्देश देते हैं।

"शीलवन्त सबसे बड़ा, सर्व रतन की खानि
तीन लोक की संपदा, रही सील में आनि।।" 14

कबीरदास कहते हैं कि जीवन में विनम्रता सबसे बड़ा गुण है। यह सब गुणों की खान है। सारे जहां की दौलत होने के बाद भी सम्मान विनम्रता से ही मिलता है। कबीर को वाणी का डिक्टेटर कहा जाता है। क्योंकि वाणी अर्थात् दोहों के द्वारा कवि ने समाज को एक नई दिशा दिखाई है। व्यक्तिगत स्वार्थ तथा संसारित मोह माया से मुक्त वे अपने मन के बादशाह थे। कबीरदास मानवीय दोषों के परित्याग पर बल देते थे। वे कहते थे कि उन लोगों से दोस्ती मत रखना जो पर छिन्द्रान्वेषी हो। उन इंसा

नों के पास जाना महापाप जो कपटी हो। कबीरदास अपने समाज को संसोधित रूप में देखना चाहते थे। उन्होने हिन्दुओं तथा मुस्लिमों में मध्य भेदभाव को मिटाकर धार्मिक सद्भाव और साम्प्रदायिक सौहार्द स्थापित करने का भरसक प्रयास किया। वे पूजा जपतप माला, छापा, तिलक, केश, मुण्डन, व्रत उपवास तीर्थ यात्रा आदि को निरर्थक समझते थे। उन्होने मनुष्य को पथ-भ्रष्ट करने वाले समस्त कुविचारों और बाह्य विचारों की स्पष्ट शब्दों में कठोर आलोचना एवं तीव्र भत्र्सना की। कबीर महान समाज सुधारक थे उन्होने सत्य प्रेम का भण्डन तथा अज्ञान तथा घृणा का खण्डन किया है।

"कबीरदास ऐसे ही मिलन बिन्दु पर खडे थे, जहां एक और हिन्दुत्व निकल जाता था और दूसरी और अशिवा, जहां एक और हिन्दुत्व निकल जाता था दूसरी और मुस्लमान, जहां एक और ज्ञान भक्ति मार्ग निकल जाता है, दूसरी और योग मार्ग, जहां एक और निर्गुण भावना निकल जाती है, दूसरी और सगुण साधना। उसी प्रशस्त चैराहे पर वे खड़े थे। वे दोनो को देख सकते थे और परस्पर विरूद्ध दिशा में गए और मार्गों के गुण दोष उन्हे स्पष्ट दिखाई दे जाते थे।" 15

निष्कर्षः-

कबीदास संत, कवि और समाजसुधारक थे, वे पूरे संसार में सुधार लाना चाहते थे, कबीर ने सधुक्कड़ी भाषा में समाज में फैली कुरीतियों का खण्डन किया। कबीर अमीर-गरीब, जाति पाति भेदभाव धन धान्य से परिपूर्ण जीवन में विश्वास नहीं करते थे। वे सादा जीवन व्यतीत करते थे। राम रहीम के नाम पर चल रहे भेद भाव तथा उनके बीच बनती खाई को पाटने की पूरी कोशिश की है। कबीर एक महान क्रान्तिकारी थे। जिन्होने बड़े निडर भाव से अपने विचारो को व्यक्त किया है। कबीर ने समाज में एक नई धारा अर्थात प्रेम की धारा प्रवाह किया। समाज में व्याप्त अन्धविश्वास, पाखण्ड, मूर्ति पूजा का उन्होने खण्डन किया है। धर्म के नाम पर हिंसा व पशुबलि का विरोध किया है। कबीर ने मनुष्य के ज्ञान व कर्म को ही महान् बताया है। वे अपने युग के महान दार्शनिक थे। उनके लिखे दोहे आधुनिक युग में भी प्रासांगिक है। उनके दोहों में अनुभूति की सच्चाई एवं अभिव्यक्ति का खरापन है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. श्याम सुन्दर दास, कबीर ग्रन्थावली पृष्ट 112
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुकल पृष्ट 65
3. श्याम सुन्दरदास, कबीर ग्रन्थावली
4. श्याम सुन्दरदास, कबीर ग्रन्थावली
5. माता प्रसाद, कबीर ग्रन्थावली पृष्ट 65
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुकल पृष्ट 65
7. शिव कुमार शर्मा (सं.) पृष्ट 14
8. बीजक पृष्ट 388
9. श्याम सुन्दरदास, कबीर ग्रन्थावली
10. कबीरदास, कबीर बीजक
11. श्याम सुन्दरदास, कबीर ग्रन्थावली
12. जयदेव सिंह, कबीर वाणी, पीयूष पृष्ट 133
13. डॉ. पारसनाथ त्रिवारी, कबीर वाणी संग्रह
14. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुकल
15. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर पृष्ट 77-78